


---

Pushtipati Stuti Naradamunikrita

——  
नारदमुनिकृता पुष्टिपतिस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Pushtipati Stuti Naradamunikrita

File name : puShTipatistutiHnAradamunikRRitA.itx

Category : ganesha, mudgalapurANa, stuti, dvAdasha

Location : doc\_ganesha

Proofread by : Yash Khasbage, Preeti Bhandare

Description/comments : mudgalapurANaM dvitIyaH khaNDaH | adhyAyaH 65 | 2.65. 17-31||

Latest update : June 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 5, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



नारदमुनिकृता पुष्टिपतिस्तुतिः



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

देवर्षय ऊचुः ।

जय देव गणाधीश जय विघ्नहराव्यय ।

जय पुष्टिपते दुण्ठे जय सर्वेश सत्तम ॥ १७ ॥

जयानन्त गुणाधार जय सिद्धिप्रद प्रभो ।

जय योगेन योगात्मन् जय शान्तिप्रदायक ॥ १८ ॥

जय ब्रह्मेश सर्वज्ञ जय सर्वप्रियङ्कर ।

जय स्वानन्दपस्थायिन् जय वेदविदांवर ॥ १९ ॥

जय वेदान्तवादज्ञ जय वेदान्तकारण ।

जय बुद्धिधर प्राज्ञ जय सर्वामरप्रिय ॥ २० ॥

जय मायामये खेलिन् जयाव्यक्त गजानन ।

जय लम्बोदरः साक्षिन् जय दुर्मतिनाशन ॥ २१ ॥

जयैकदन्तहस्तस्त्वं जयैकरदधारक ।

जय योगिहृदिस्थ त्वं जय ब्राह्मणपूजित ॥ २२ ॥

जय कर्म तपोरूप जय ज्ञानप्रदायक ।

जयामेय महाभाग जय पूर्णमनोरथ ॥ २३ ॥

जयानन्द गणेशान जय पाशाङ्कुशप्रिय ।

जय पर्शुधर त्वं वै जय पावनकारक ॥ २४ ॥

जय भक्ताभयाध्यक्ष जय भक्तमहाप्रिय ।

जय भक्तेश विघ्नेश जय नाथ महोदर ॥ २५ ॥

नमो नमस्ते गणनायकाय नमो नमस्ते सकलात्मकाय ।

नमो नमस्ते भवमोचनाय नमो नमस्तेऽतिसुखप्रदाय ॥ २६ ॥

इति स्तुत्वा श्रीगणाधीशं प्रणेमुस्तं महामते ।

उत्थाय ननृतुः सर्वे हर्षयुक्ताः सुरर्षयः ॥ २७ ॥

तेषां महोत्सवं दृष्ट्वा तान् जगाद महाप्रभुः ।

प्रसन्नात्मा पुष्टिपतिर्भक्तान् भक्तप्रियङ्करः ॥ २८ ॥

(फलश्रुतिः)

पुष्टिपतिरुवाच ।

भवत्कृतमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति नित्यशः ।

श्रोष्यते सकलं तस्य जयरूपं भविष्यति ॥ २९ ॥

पठनाच्छ्रवणादस्य सर्वं जयति मानवः ।

अन्ते मदीयसायुज्यं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ३० ॥

एवमुक्तवान्तर्दधेऽसौ पतिः पुष्टेर्गणेश्वरः ।

देवाश्च मुनयः सर्वे विस्मिता अभवंस्तदा ॥ ३१ ॥

इति नारदमुनिकृता पुष्टिपतिस्तुतिः सम्पूर्णा ॥


द्वादशस्तोत्रं

- ॥ मुद्गलपुराणं द्वितीयः खण्डः । अध्यायः ६५ । २.६५। १७-३१ ॥


- .. mudgalapurANaM dvitIyaH khaNDaH . adhyAyaH 65 . 2.65. 17-31..

Proofread by Yash Khasbage, Preeti Bhandare

---

——  
*Pushtipati Stuti Naradamunikrita*

pdf was typeset on June 5, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

